इस कापी का यात्रा दूसरे कापी में लिखा गया है।

+ ॥ वाराणसी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा

जगननाथ मन्दिर - बी० १।१५१ में

वह कापी से लिखा ~~छ~~गया है

इस कापी में से पुस्तक छप गया है।

//

"वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा"

(बड़ी अन्तर्गृही यात्रा) नगर यात्रा)

[illegible]

यात्रा करनी चाहिये। वाराणसी प्रदक्षिणा

त्रा ~~करने~~ दर्शन- वाले नर-नारियों ~~के स्थूल पाप~~

जन्म तथा पूर्व जन्मों के स्थूल पाप

ष्ट होते हैं। भारत के सभी प्रान्तों

से और नेपाल, भूटान, पूर्व

बंगाल, एवं लंका, से मारिशस ~~से~~

अन्य देशों देशों-विदेशों भी ~~कुछ~~ ~~विदेशों~~ से भी यात्री आकर

~~काशी पञ्च क्रोशी यात्रा~~ (वाराणसी

यात्रा ~~यात्रा~~ करते आते हैं। विदेशों से

आये हुए यात्री बड़े उत्साह के ~~साथ~~

साथ श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर

~~काशी (वाराणसी) प्रदक्षिणा-दर्शन यात्री~~
~~(बड़ी अन्तर्गृही यात्रा)~~ और ~~क्षेत्र संन्यास लेकर~~
~~काशी वास करने वाले एवं~~ काशी क्षेत्र से
संन्यास लिये हुये और सभी लोगों को ~~काशी वास~~-
(वाराणसी) की श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर
यात्रा करनी चाहिये। वाराणसी प्रदक्षिणा-
-यात्रा दर्शन ~~करने~~ वाले नर-नारियों ~~के स्थूल पाप~~
के इस जन्म तथा पूर्व जन्मों के स्थूल पाप
नष्ट होते हैं। भारत के सभी प्रान्तों
से और नेपाल, भूटान, पूर्व
बंगाल, एवं लंका, ~~से~~ मारिशस से
अन्य देशों भी ~~पश्चिम विदेशों~~ दिशों-विदेशों से भी यात्री आकर
~~काशी पञ्च क्रोशी यात्रा~~ (वाराणसी)
यात्रा करते आते हैं। विदेशों से
आये हुए यात्री बड़ी उत्साह के ~~साथ~~
साथ ~~सम~~ श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर

किंवदन्ति है कि

काशी की यात्रा पूर्ण करके, यात्री कुशल मंगल से अपने घर जाते हैं।

काशी

वाराणसी यात्रा ~~का प्रारम्भ~~ को ~~प्रथम~~ सब से पहले विश्वनाथ ~~जी~~ पार्वती आश्विन ~~अन्न पूर्णा~~ जी ने आसीन शुक्ल पक्ष सरद पूर्णीमा के दिन वाराणसी (त्रेता युग के मध्य में भवानी शंकर जी ने वाराणसी यात्रा किये।) प्रदक्षिणा यात्रा किये ।/ ~~द्वापर युग मे अन्न पूर्णा विश्वनाथ जी ने मार्ग- शीर्ष शुक्ल पक्ष पूर्णीमा के दीन प्रातः सुबह~~ वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा' शास्त्र विधि से किया । ~~व~~ द्वापर युग ~~के~~ ~~अन्त मे~~ विशालाक्षी विश्वनाथ जी ने वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा किये की। इसी यात्रा को गाँव के "यागी पड़ी अन्तर्गृही यात्रा" कहते हैं। वास्तव में यह यात्रा वाराण

६

सी प्रदक्षिणा यात्रा है। वह यात्रा प्रत्येक पूर्णिमा ~~पूर्णिमा~~ और प्रत्येक कृष्णा-गयो दशी को दिन व यात्री ~~करते है~~ करते है।

परन्तु 'वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा' जिस दिन अपने हृदय में श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न हो उसी ~~दि~~ दिन से ~~यात्रा करनी~~ यात्रा करने को ~~दिन~~ निश्चय करना चाहिए। (यह पुस्तक एक सौ एक बार वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा करने के पश्चात लिखा गया है।)

वाराणसी माहात्म्य

किया है। जिन मनुष्यों का कोई सहारा नहीं है, उनके लिए वारासासी ही आश्रय है। जो व्यक्ति जरा वृद्धावस्था से पीड़ित है, तथा जो व्यक्ति रोग से व्याकुल होगया हैं। जिन को कोई

और आधार जही नहीं है, उन के लिये एक मात्र आश्रय वाराणसी है। जो व्यक्ति पद पद पर विपत्ति, आपत्तियों से घिरा हुआ है, रात दिन (चिन्तामग्न रहता है,) और दुःख, संकट से घिरा हुआ है। प्रति दिन अशान्त, आक्रान्त है, जिन का सहारा कोई नहीं है, ऐसे दुःखी व्यक्तियों को वाराणसी हीं धर्म, अर्थ, काम मोक्ष चारों पदार्थ देती है। ~~वाराणसी देती~~ देती है। वह व्यक्ति चारों पदार्थों को प्राप्त कर के ~~मोक्ष~~ काशी में शरीर को त्याग कर मोक्ष पद प्राप्त कर लेता है।

ॐ

जन्मान्तर सहस्त्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मभिः।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात परमेश्वरात्॥
[मत्स्य पुराणे वाराणसी माहात्म्ये]

अर्थ- ब्राह्मण भूदेव शंकर भगवान से कहते है- कि हजारों जन्मों में मैंने अनेकों पुण्य कर्म किये - वे पुण्य धीरे-धीरे सञ्चित होते गये। उन्हीं पुण्यों के फल से और भगवान की कृपा से तथा अपने इष्टदेव के आशीर्वाद से परम मनोहर मोक्ष दायिनी वाराणसी पुरी मिली है।

वाराणसी सीमा का और वाराणसी
प्रदक्षिणा यात्रा का प्रमाण यह है

ब्रह्मवैवर्त पुराण
स्कन्द पुराण, मत्स्यपुराण, पद्म पुराण
वामन पुराण, (काशी रहस्य) जाबालोपनिषद्
में मिलता है।

वाराणसी की सीमा का इस प्रकार से है। पूर्व में आधे गङ्गा जी तक वाराणसी के दक्षिण में अस्सी नदी तक पश्चिम की सीमा मडुवाडीह ~~थाना के दक्षिण बगल के~~ शाल टंक विनायक तक है। ~~हम कह सकते हैं~~ ~~कि जैसे पुराने~~ . . . ~~ककरमत्ता~~

~~मडुआडीह लहरतारा वाराणसी~~

~~रेलवे स्टेशन के पश्चिम गेट से~~

~~केन्दू मैन्दू धरिया होते हुए वरुणा~~

~~पुल वाराणसी को~~ उत्तर की सीमा

वरुणनदी है। तक होती है इसी वाराणसी

सीमा ~~सिमा~~ के अन्दर सेहीं बाराणसी

प्रदक्षिणा यात्रा होती हैं।। नोट[-

बाराणसी यात्रा करते समय में जो यात्री

मुमुक्षु भवन के पास के ~~पु~~ अस्सीनदी

के पुल को पार करके संकट मोचन होकर

यात्रा करते हैं उनकी यात्रा पुराणों ~~से~~ में

खण्डित माना है, अतः जगन्नाथ मन्दिर

होते हुये से दुर्गा जी शुकुलपुरा ~~शुकुल पुर~~ होते

हुए मडुआडीह ~~मडुआ हैडीह~~ जाना चाहिए।

दूसरा चौकाघाट से उत्तर वरुणातट जाके

बाली से आदि केशव जाने वाली रास्ता बन्द होगई है, अतः चोकाघाट से वरणा तट होकर जाने वाली रास्तो में बहुत खतरा है। वरणा तट में दल-दल ~~दक-दक~~ तथा कीचड़ है पैर फिसलकर यात्री वरणा नदी में गिरते है। मैं भी यात्रा करते समय तीन बार ~~[illegible]~~ बार वरुणा नदी में गीर पड़ा था सभी वस्त्र भींग गये थे। यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् मैं ~~को~~ ललिताघाट ~~[illegible]~~ विश्वनाथ पुस्तकालये में वरणा तट से आदि केसव जाने का प्रमाण खोजने गया। वाराणसी यात्रा में वरणा तट से आदि केशव जाने का शास्त्रो में कोई प्रमाण नही मिला।

यहाँ   दर्शन

"वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा" का सूक्ष्म रूप से बर्णन करता हूँ। ~~करते हैं~~ इसका विस्तार से काशी दर्शन में बर्णन किया गया है।। काशी रहस्य के ११ अध्याय श्लोक   से वाराणसी प्रदक्षिणा का वर्णन है।

"प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा कार्या प्रयत्नतः।
सम्यक पृष्टं त्वया देवि ! महाहङ्कार नाशनम् ।।
प्रायश्चित्तं त्यासितो हि क्षेत्राघौघ विनाशनम् ।।"
[काशी रहस्य अध्याय ११ श्लोक . . .]

अर्थ- शंकर जी भवानी जी से कहते हैं कि हे भवानी! वाराणसी यात्रा करने वाले नर-नारीयों को प्रति दिन भूमि ~~शुद्ध~~ मिट्टी का दण्डपाणी बना कर पूजा प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए। हे देवी! तुमने ठीक प्रश्न किया यह प्रदक्षिणा यात्रा ~~यात्रा~~

करने वाले यात्रियों के अहंकार को
नाश करने वाला है। काशी में
वास करने वाले और काशी में क्षेत्र
संन्यास लेकर काशी वास करने
वाले नर-नारियों से वाराणसी में
मन-वाणी-शरीर से जो पाप होते
हैं, उन पापों के प्रायश्चित्त करने
के लिये, और पाप समुदायों को नष्ट
करने के लिए "वाराणसी प्रदक्षिणा
दर्शन
यात्रा" ~~करनी अनवार्य है~~ । करना
अनिवार्य है

दर्शन
“वाराणसी प्रदक्षिणा (यात्रा”

प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर
ढुण्ढिराज
विश्वनाथ अन्नपूर्णा ~~ढुण्ढिराज~~
आदि के दर्शन करने के पश्चात्
दण्डपाणि जी की पूजा करके
आज्ञा लेकर ~~कालराजेश्वर का~~
विश्वनाथ जी का दर्शन ~~कर~~ कर
दर्शन करके, विश्वनाथ जी से
प्रार्थना करें। ~~हे विश्वनाथ भगवान~~!
मैं हे वाराणसी के ~~क~~ ईश्वर वारा-णसीश्वर। मैं समस्त पापों के
प्रायश्चित्त करने के लिये, ~~और~~ और
पितरों को मुक्ति दिलाने के लिए,
तथा अपने कल्याण ~~करने~~ के लिये
दर्शन के
“वाराणसी प्रदक्षिणा (यात्रा करने
चाहता
~~चाहता~~ हूँ। प्रार्थना करके

काशीखण्ड के 56 अध्याय में कहा गया है
की छप्पन विनायक के प्रथम आवरण ~~आठ~~

विनायकों को छोड़कर वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा करनी चाहिये।

1 दण्डपाणी भ्यो नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर सी० के० ३६/११ मैं है मुहल्ला ढुण्ढिराज गली]

कात्रराजेश्वराय नमः [वैकुण्ठेश्वर के बगल मै है]

वाराणसी श्वरी देवी विश्वनाथ जी के उत्तर पूर्व के कोने ~~के~~ में रूपावती देवी के नाम से पूजारी पूजाते हैं।

2 वाराणसी श्वरी देव्यै नमः [सी० के० ३५/१९ में है।

3 वाराणसी श्वराय नमः [म० नं० सी० के० ३५/१ च विश्वनाथ जी]

4 पञ्च विनायकाय नमः [शिवनाथ सभा ज्ञान मण्डप में है।

तीर्थाय

५ ज्ञानवापी ~~तीर्था~~य नमः [ज्ञानवापी

व्यास गद्दी

से संकल्प लेकर संकल्प बोलने

वाले ब्राह्मण को यथा शक्ति सीधा

दक्षिणा देकरके ज्ञानवापी से पूर्व

मणिकर्णिका घाट में जाकर पात्री

मार्जन करते हैं।

६ मणिकर्णिकातीर्थाय नमः (मार्जनकर

[पञ्चोपचार से पूजा की सामग्री

-जल, रोली

साथ में लेकर गङ्गा ~~जल सेंदी~~

लायचीदाना

अगर बत्ती, ~~अलचीदाना~~ और वस्त्र,

चढ़ाने के लिये फुटकर पैसा, धूप,

दीप नैवेद्य, बिल्वपत्र, दूर्वा फूल

आदि साथ में लेकर] मणिकर्णि-

का घाट से दक्षिण लाइन से धीरे-

-धीरे शिव: शिव महामन्त्र का जप

करते हुए "हर हर महादेव शम्भो
काशी विश्वनाथ गङ्गे" ~~कीर्तन~~
इस महामन्त्र का कीर्तन
करते हुए और दर्शन, पूजन करते
~~हुए चलना चाहिये~~ । हुये शनैः-
शनैः चढ़ते है ।

7 → गङ्गेश्वराय नमः
~~केश्वराय नमः~~ [~~मकान, नम्बर~~
मन्दिर नम्बर - . . . . .
मणिकर्णिका घाट में पूजारी
तारकेश्वर के नाम से पूजाते हैं ।

8 ललिता देव्यै नमः [मन्दिर मकान, नम्बर
डी० १)६७ में है मुहल्ला ललिताघाट)
इनके दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को
बुद्धि-योग देकर ज्ञान की साधना
कराती हैं । (ललिता घाट से दक्षिण)

9 शूलटङ्केश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी. . . . मुहल्ला दशाश्वमेध
घाट]

शूलटङ्केश्वर दर्शन कर चरणामृत

[पीने वाले भक्तों के पेट का शूल

आदि रोग नष्ट करते हैं, और

दरिद्रता, चिन्ता [दूर करते हैं।

शूलटङ्केश्वर से दक्षिण क्षेमेश्वर घाट में है।

10 क्षेमेश्वराय नमः [गङ्गातीर में क्षेमेश्वर हैं।

~~मकान भार~~ मकान नम्बर के सामने .....।

क्षेमेश्वर अपने दर्शन करने वाले भक्तों

के सब अपराध को क्षमा करके सुख

एवं शान्ति प्रदान करते हैं।

11 केदारेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर

बी.६/१०२। में है। मुहल्ला केदार घाट

दर्शन, पूजन करनेवाले

केदारेश्वर अपने भक्तों ~~को~~ के कष्ट,

रोग तथा संकट दूर करते हैं।

केदारेश्वर से दक्षिण]

12 अस्सी गङ्गा में संगम श्वर तीर्थाय नमः

अस्सी में ही अस्सी गङ्गा संगम तीर्थ ~~का~~ था भारत सरकार ने —

~~को~~ सन १६ --८१ में असी नदी को नगवा में घोड़कर नदी को गङ्गा ~~से जोड़ गया~~ मिला दिया तब से अस्सी नदी नगवा घाट में जाकर गङ्गा जी में मिलती है। अस्सी तीर्थ और अस्सी सङ्गमेश्वर अस्सी घाट में ही हैं ~~रहे जो श्रौथ~~ और अस्सी घाट से होकर के ही, यात्रा अनादि काल से ~~चलती है और~~ चलती आ रही है और चलती रहेगी। ~~चलेगी~~ (अस्सी घाट से गङ्गा जल साथ में लेकर चलें)

१३ अस्सी सङ्गमेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर बी० १)१७४ में मुहल्ला-अस्सी घाट

अस्सी सङ्गमेश्वर~~य नमः~~ [अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के

गरीबी; दुःख- रोग, दूर करते हैं।
अस्सी घाट से दक्षिण बगल में जगन्नाथ
जी का दिव्य मन्दिर है। दर्शन करें।
जगन्नाथ भगवान उत्तराभिमुख हैं।

14 जगन्नाथ विष्णवे नमः [मकान-
मन्दिर नम्बर बी० ..... में है। मुहल्ला-
अस्सी घाट जगन्नाथ जी अपने-
-2 भक्तों को शिव, विष्णु भगवान
की भक्ति तथा सज्जन साधु-सन्त
महात्माओं की सङ्गति और ऐश्वर्य
देकर सुख देते हैं। जगन्नाथ
जी काशी में क्षेत्र-सन्यास लेकर काशी
वास करते हैं। काशी के चारधाम की यात्रा में
ब जगन्नाथ पुरी धाम है] जगन्नाथ-
[illegible] पुरी से दुर्गा जी जाने का

मार्ग इस प्रकार है:- जगननाथजी के मन्दिर से उसी मार्ग से सड़क में असीघाट से पश्चिम आगे से बायें तरफ मुड़ते ही पश्चिम गोयनका ~~गोयनका~~ गली बनकटी हनुमान जी होते हुए। दुर्गा जी दुर्गाकुण्ड में मार्जन करके दुर्गा जी का दर्शन-पूजन करके जलपान करते हैं। वाराणसी-यात्रा में दुर्गा जी में प्रथम विश्राम है। जो यात्री चलने में असमर्थ हैं वे ~~एक~~ तीन-रात्री की यात्रा करते हैं। जो यात्री दुर्गा जी में विश्राम करते हैं, दुर्गा जी के दक्षिण कुँआ के पास में दुसरे पार्क के मालिक से बात करके विश्राम कर सकते हैं।

१५ दुर्गा देव्यै नमः (~~मकान~~ मन्दिर नम्बर
बी० २७/१ में मुहल्ला-दुर्गा कुण्ड)
दुर्गाजी अपने भक्तों की दरिद्रता,
रोग, विघ्न और संकट को दूर
करती हैं। तथा दुर्गा जी ~~पुरवासी~~
पुरवासियें ~~यों~~ की रक्षा ~~होती है~~। करती है।
दुर्गापुरी में विश्राम करने वाले यात्री
संध्या करने के पश्चात पञ्चाक्षरी
महामन्त्र को तीनो संध्या के पश्चात
जप करें। ब्राह्मण साधु सन्यासियों
को जलपान कराना चाहिए।
दूसरे दिन स्नान-संध्या करके
दुर्गा जी के दर्शन करने के पश्चात
यात्रा प्रारम्भ ~~प्रारम्भ~~ करें। दुर्गा जी से
प्रार्थना ~~करे~~ करें—

जय दुर्गे महादेवि जय काशी निवासिनी।
क्षेत्र विघ्न हरे देवी पुनर्दर्शन नमोस्तुते॥

प्रार्थना करके दुर्गा जी से पश्चिम दर्शन-पूजन, कीर्तन करते हुये धीरे२ दुर्गा जी से पश्चिम कबीर नगर कॉलोनी आगे से बायें मुड़कर शुकुलपुरा ~~सुकुल~~ ~~पुर~~ होते हुए शुक्लेश्वर का दर्शन कर पश्चिम की गली से आगे से दाहिने तरफ मुड़कर ~~मुड़कर~~ खोजवाँ से मडुवाडीह जाने वाली पक्की सड़क से बजर्डीह से ~~सुन्दर पुर जाने~~ ~~सड़क~~ त्रिमुहानी से दाहिने मुड़कर ~~कर~~ बजरडीहा ~~थाना~~ चौकी ~~चौकी~~ के बगल से पोखरी- बड़ी पटिया, ककरमत्ता - भरेखराऊ ~~कैखराऊ~~ मुहल्ला होते हुए मडुवाडीह

रेलवे स्टेशन के दक्षिण फाटक से लाइन पार करके सडक से उत्तर आगे त्रिमुहानीसे पश्चिम डीह मुहल्ला की गली से मडुवाडीह थाना के दक्षिण बगल के गणेश मन्दिर में शाल टङ्क विनायक गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है। शाल टङ्क विनायक के उत्तर बगल में विशाल कुण्ड है। बगल में कुँआ ~~कूआ~~ है।

यह दूसरा पड़ाव है- यहाँ यात्रा आधा होजाती है। यहाँ पर बजार, और थाना, स्वास्थ्यकेंद्र, रात्रि ~~[illegible]~~ सत्रों में विश्राम करने का सब साधन है।

१६ शाल टङ्क विनायकाय नमः [मुहल्ला मडुवाडीह थाना के दक्षिण बगल में है। शाल टङ्क विनायक दर्शन,

पूजन-करनेवाले भक्तों को कष्ट,
संकट, गरीबी एवं चिन्ता को
दूर करते हैं। दर्शन करने के
पश्चात् मन्दिर के बाहर पश्चिम की
ओर मुँह करके "भीम चण्डी देव्यै
नमः" कहते हुए अक्षत छोड़ें।
शैल टङ्क विनायक में रुकने
वाले यात्री स्नान संध्या कर
साधु सन्त सैन्यासी पास में होतो
जल पान या भोजन कराकर
स्वयं भोजन करें। "काशी मोक्ष
निर्णय" (काशी माहात्म्य की
कथा श्रवण करके कीर्तन करके
चालीसे के पश्चात्। वाराणसी एवं
विश्वनाथ भगवान का स्मरण।

करते हुए भ्रमन करें।
(नोट एकरात्री के यात्रा में शालटङ्क विनायक के पास रात्री में विश्राम करना चाहिए।)

~~करते हुवे सयन करे~~। प्रात: नित्य-कर्म से निवृत्त होकर शालटङ्क विनायक के दर्शन-पूजन करने के पश्चात कीर्तन करते हुवे शनै:-शनै: यात्री उत्तर थाना से पूर्व मडुवाडीह चौराहा से उत्तर आगे सड़क के पश्चिम पटरी में शंकरजी का मन्दिर विशाल तालाब है।

"विश्वामित्रेश्वराय नमः"

मुहल्ला-लहरतारा . . .]

दर्शन करके विश्वामित्रेश्वर से उत्तर लहरतारा वाराणसी ~~से~~ रेलवे स्टेशन के पश्चिम फाटक से रेलवे लाइन

पार करके सड़क से आगे
लाइन पार करते ही बायें
तरफ पाशपाणि विनायक
के मन्दिर से सटे हुए दोनों
शंकर जी के मन्दिर में
गणेश जी पूर्वाभीमुख
है, यह कुष्माण्ड विनायक काशी
रहस्य के हैं।

"कुष्माण्ड विनायकायनमः"

मुहल्ला के एक में एक टीया
कुष्माण्ड विनायक विघ्नकोटर एवं शंकट को दूर करते हैं
यहाँ से उत्तर बगल के श्री
मार्ग में चण्डी देवी के
मन्दिर में मुण्ड विनायक
पश्चिमाभिमुख हैं।

मुण्ड विनायकायनमः [कुल्ला-केन्द्र मैन्द्र सरिया शक्ती-मार्ग दर्शन करने वाले दर्शनार्थियों को पदोन्नती ऐश्वर्य की प्राप्ती होती है।

"चण्डी देव्यैनमः" [केन्द्र मैन्द्र सरिया शक्ती मार्ग] चण्डी देवी अपने भक्तों के प्रचण्ड संकट, आपत्ति को दूर करती है। चण्डी देवी से पास में पश्चिम बगल में चण्डेश्वर हैं।

"चण्डेश्वरायनमः" [शक्ती मार्ग) चण्डेश्वर अपने भक्तों को इस लोक में ऐश्वर्य देकर सुख देते हैं और परलोक में कैलाश में

वास कराते हैं। चण्डेश्वर
से पूर्व से उत्तर चौराहा से पूर्व
दूरदर्शन (टेलीविजन) ~~टेलीविजन~~ स्तम्भ के बगल
से पूर्व नदेश्वर मुहल्ला में
सड़क के उत्तर पटरी में फाटक
के अन्दर काशीराज विभूतिनारायण
सिंहजी की नदेश्वर कोठी के सामने
~~के~~ शंकर जी के मन्दिर में नन्दीश्वर,
नन्दीश्वरी देवी, और वेदेश्वर हैं।

- नन्दीश्वरायनमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर
एस०१८/२४०। में है मुहल्ला नदेश्वर
नन्दीश्वर अपने दर्शन करने वाले
भक्तों को ऐश्वर्य, स्थिर लक्ष्मी
~~सबं सुखी भोग~~ देते हैं।

नन्दीश्वरी देव्यै नमः [~~मकान~~, मन्दिर नम्बर एस. १८/२४० में ~~है~~ मुहल्ला-नन्देश्वर की)। नन्दीश्वरी देवी अपने भक्तों के रोग, दुर्गुण दुर्व्यसन दूर करती हैं। ज्ञानी माता-पीता के आज्ञाकारी पुत्र देती है।

वेदेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर एस. १८/२४० में ~~है~~ मुहल्ला-नन्देश्वर। ~~अपना~~ वेदेश्वर अपने भक्तों को बुद्धियोग और ब्रह्मविद्या देते हैं। भक्त के पुत्र-~~[illegible]~~ पौत्र विद्वान एवं भगवान के भक्त उत्पन्न होते हैं। नन्देश्वर से उसी मार्ग से सड़क में सड़क से रर्व-

नदेश्वर चौराहा से पूर्व बायें
तरफ से चौका घाट जानेवाली
सड़क से ~~व~~ रेलवे पुल के नीचे
पूर्व चौकाघाट ~~म~~ संपूर्णानन्द
संस्कृत विश्वविद्यालय तिमुहानी
के सामने उत्तर बगल के हनुमान
~~जी के~~
जी के मन्दिर में हनुमान जी से सटे हुये।
दक्षिण बगल में बिकट द्विज-
विनायक पूर्वाभिमुख है।
लकड़ी कताल के पिछे यह
[काशी रहस्य के विनायक हैं (काशीखण्ड
के विकट द्विज विनायक धूप चण्डी
के मन्दिर में हैं।)

• विकट द्विज विनायकाय नमः [मकान न

मन्दिर नम्बर . . . मुहल्ला।

विकट द्विज विनायक के
चौकाघाट] अपने सदर्शन - पूजन

करनेवाले भक्तों के विघ्न, शंकट संकट और
दुर्गुणों को दूर करते हैं। जैसे कि
किसी भी सुभ शुभ कार्य करने जाने के
एक दिन पहले गणेश जी की पूजा करके
लड्डू-दूध आदि का भोग लगा कर
प्रसाद साधु ब्राह्मण आदि को वितरण करें
कुछ दूर्वा और लड्डू साथ में लेकर
जाय तो सब काम सफल होते हैं।
और किसी भी गणेश जी के पूजा
करके इसी प्रकार कार्य करें तो
सब कार्य सफल होते है। विकट
द्विज विनायक के मन्दिर से बाहर में उत्तरा
भी मुख खड़े होकर पञ्च पाण्डवेश्वरा
यनमः उच्चारण करते हुये अक्षत छोड़ें।
पहले यात्री एक दिन के यात्रा में

चण्डी देवी के मन्दिर के पास में रात्री में विश्राम्र करते थे मेक्टरी कैन्द्र मैन्द्र रेरिया बनने के पश्चात् चौका घाट में यात्री रात्री में निवास करने लगे है। चौका घाट से बरणा किनारे से लेकर आदि केशव जाने का मार्ग बन्ध होगया पहले ६ फुटी कच्चा सडक बना था। चौका घाट से आदि केशव जाने का रास्ता इस प्रकार है, चौका घाट से पूर्व ~~[illegible]~~। जी० टी० रोड सडक से वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन के पश्चिम फाटक से रेलवे लाइन पार करके उत्तर से पूर्व राज घाट जाने वाली गली से राजघाट में रेलवे लाइन पार कर तेहीं

रेलवे लाइन के किनारे से बड़ी लाइन के नीचे राधा कृष्ण मन्दिर में कुन्ते स्वर है दर्शन कर के पूर्व बगल में रामानन्द आश्रम, तोता दरीमठ होते हुये जी० टी० रोड में बाये पटरी से बसन्त कालेज के फाटक से बसन्त कालेज बैंक के उत्तर, पूर्व बगल में सड़क के बाय पटरी के गणेश मन्दिर में राज पुत्र विनायक पूर्वा भी मुख है।

राजपुत्र विनायकायनमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर ए० ३७/४८ । में बसन्त कालेज]

राजपुत्र विनायक अनेक प्रकार का विघ्न रोग दूर करते है, साथ ही अपने भक्तों को कष्ट देने वाले शत्रु परास्त हो जाते है

राजपुत्र विनायक के पास की भूमी में राजा का अन्तःपुर था भविस्य में भी रहेगा । राजपुत्र विनायक से पूर्व बगल में चौमुहानी पर आदिकेशवका विशाल मन्दिर है।

- आदिकेशव विष्णावेनमः [मन्दिर [~~मकान~~ नम्बर   में है मुहल्ला आदिकेशव चौमुहानी बसन्त कालेज]

आदि केशव अपने भक्तों के अज्ञान अन्धकार दूर करते है ।(मन्दिर के बाहर उत्तराभीमुख खडे होकर वृषभज्वजेश्वरायनमः कहकर अक्षत छोडे।

- ज्ञान केशवायनमः [मकान मन्दिर नम्बर   में है मुहल्ला आदिकेशव] ज्ञानकेशव अपने भक्तों को [illegible] विद्या-ज्ञान देते है।

वरणा, गङ्गा संगमेश्वरायनमः

~~मकान~~ मन्दिर . नम्बर मैं है प्रभु आदि केसवव.]

वरणा.गङ्गा -

आदिकेशवेश्वर अपने भक्तों को मेधा स्मरण शक्ति एवं भक्ति प्रदान करते है ॥ आदिकेशव से मणिकर्णिका घाट जाने का मार्ग इस प्रकार है —(कभी,कभी सरद पूर्णिमा के दिन गङ्गा जी में बाढ़ २ आता है उस समय ~~का~~ खाट के ऊपर के गलीयों से चलकर यात्रा पूर्ण करें।)

→ ब्रह्मवैवर्त पुराण के काशी रहस्य के ११ अध्याय में वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा एकरात्री से तीन रात्रीतक तीन पड़ाव में विश्राम करके सास्त्र विधी से यात्रा करें। कहा है आदिकेश व में

तीसरा विश्राम कक्षा है। पूर्ववत सब कार्य करें। दूसरे दिन भी पूर्ववत नीत्य कर्म से निवृत होकर आदि केशव के दर्शन करने के पश्चात यात्रा परारम्भ करें। ' आदि केशव के

आदि के

दर्शन करने के पश्चात | उसी मार्ग से बसन्त कालेज के फाटक जी० टी० रोड पहुचने के पहले चाय आदि के दूकान है उन्हीं दूकान के बीच से एक पक डण्डी रास्ता गङ्गा किनारे गई है। उसी मार्ग से गङ्गा तट से दक्षिण प्रहलाद घाट में प्रहलादेश्वर के मन्दिर में प्रहलाद केशव हैं।

• प्रह्लाद केशवाय नमः [मन्दिर मकान नम्बर ए०१०/८० में मुहल्ला प्रह्लाद घाट]

प्रह्लाद घाट से दक्षिण बगल में बद्री नारायण घाट में बद्रीनारायण भगवान की मूर्ती पूर्वाभीमुख है।

- बद्रीनारायण विष्णवेनमः

मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर ए० १/७२ में है [मुहल्ला बद्रीनारायण घाट गाय घाट] बद्रीनारायण अपने भक्तों को दुःख, दरिद्रता दूर करते है और शिवजी विष्णु भगवान की अनन्य भक्ति देते है।

नरनानारायणेश्वरायनमः [मकान मन्दिर नम्बर ए० १/७२ में है [मुहल्ला बद्रीनारायण घाट] नरनारायण अपने भक्तों को धन,धान्य से संपन्न करते है।

बद्रीनारायण घाट से दक्षीण मे
रामघाट में बीर रामेस्वर है।

बीररामेस्वराय नमः [के
मन्दिर नम्बर . . . . में है
रामघाट पर है)

~~बीर घाट~~ बीर रामेस्वर के अपने दर्शन
पूजन, उपासना करने वाले नर नारियों
के पुत्र परपौत्र बीर महापुरुष राम
भक्त उत्पन होइं॰। और दर्शन करने
वाले भक्तों के मनोकामना पूर्ण
करते है। रामघाट से दक्षीण बगल में
मणिकर्णिका घाट है।

मणिकर्णिका तीर्थाय नमः [मणी
कर्णिका घाट में स्नान या मार्जन
करके गङ्गा जल, पूजन की सामग्री
वस्त्र आदि साथ में लेकर।

मणिकर्णिका घाट से पश्चिम ब्रह्म-नाल ज्ञान वापी होते हुये, ज्ञान वापी के उत्तर फाटक से ढुण्ढिराज गली में, दण्डपाणि जी के मन्दिर में

दण्डपाणी विनायकाय नमः
दण्डपाणी श्वरायनमः
सुभ्रम् गणाय नमः
विभ्रम् गणाय नमः

दण्ड पाणी जी के मन्दिर मे है।

- दण्डपाणी भ्वो नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर सी.के. ३६/११ में है मुहल्ला ढुण्ढिराज गली]

~~श्वर~~ पूजा करें ~~के~~ । दण्डपाणी जी से दक्षिण साक्षीविनायक मुहल्ले में साक्षी विनायक है

- साक्षी विनायकायनमः [~~मन्दिर नम्बर~~
~~जी.~~ मुहल्ला साक्षी विनायक]

मणिकर्णिका घाट से पश्चिम ब्रह्मनाल ज्ञान वापी होते हुये, ज्ञान वापी के उत्तर फाटक से ढुण्ढिराज गली में, दण्डपाणि जी के मन्दिर में

दण्डपाणी विनायकाय नमः
दण्डपाणी स्वराय नमः
सुभ्रम्म् गयाय नमः
विभ्रम्म गणाय नमः

दण्ड पाणी जी के मन्दिर मे है।

- दण्डपाणी भैरो नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर सी.के.३६/११ में, मुहल्ला ढुण्ढिराज गली]

~~श्रर~~ पूजा करें। दण्डपाणी जी से दक्षिण साक्षीविनायक मुहल्ले में साक्षी विनायक है

- साक्षी विनायकाय नमः [~~मन्दिर नम्बर~~ [illegible]]

~~डी.~~ ~~मुहल्ला साक्षी वि~~

मन्दिर
~~मकान~~, नम्बर डी० १०/६ । मेंहैमुहल्ला
साक्षी विनायक] अन्नपूर्णा,
वाराणसी देव्यै नमः
काऊराजेश्वर, वाराणसीश्वर
विश्वनाथ जी के दर्शन करने
के पश्चात, आप का वाराण
सी प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण हुआ

→ वाराणसी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर
सी.के.३५/१८ । मेंहैमु विश्वनाथ
जी के पूर्व उत्तर के कोने में जो देवी
जी की मन्दिर पूर्वा भी मुख है
वहीं वाराणसी देवी है]

वाराणसी देवी अपने दर्शन, आराध-
ना करने वाले भक्तों को इस लोक में
धन, पुत्र, पौत्र आदि सुख का साधन
देकर अपने भक्तों को सुखी रखती है।

और अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती है।
वाराणसी स्वरायनमः [विश्वनाथ जी है

नूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद् उमापते।

ज्ञानवापी से संकल्प छोड़कर, यथा-शक्ति, दक्षिणा (अन्न, वस्त्र फल आदि देकर] इस प्रकार काशी में काशी क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले क्षेत्र संन्यासियों का और वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा करने वाले नर-नारियों यात्रा पूर्ण हुवी। वाराणसी प्रदक्षिणा का प्रत्यक्ष जो चमत्कार हुआ वह यह है.

यात्रियों के मनोरथ पूर्ण हो गये। जो कार्य में विघ्न आया था वह कार्य सिद्ध हुआ, जिन यात्रियों के शरीर में

रोग थे वह रोग शान्त होगया
यात्रियों के कठिन से कठिन कार्य
भी सिद्ध होगये। और यात्रा
में विशेषता यह है यात्रियों के
पितर एवं इष्टदेव भी प्रसन्न
होते है। तथा यात्रा करने वाले
यात्रियों को विद्या, भक्ति, ज्ञान की
प्राप्ती होती है। पितरों को तृप्ति
दिलाने के लिये उदस्या से काशी की
यात्रा करते है, और ब्राह्मणों को वरणी
करके अपने पितृयो के भिन्न भिन्न
नाम से ब्राह्मणों को यात्रा करने भेजते
है। पितृयों के उद्धार के लक्ष्य लेकर
काशी की यात्रा करने से एवं
ब्राह्मणों द्वारा कराने से पितर किसी

भी योनि में होड़ें वह शरीर छोड़कर
मुक्त होजाते है, यह बात मैं नहीं
कहरहा हूँ। वेद, उपनिषद, पुराण
कहरहे है ।

त्वदीयं बस्तु विश्वेश तुभ्यमेव -
समर्पितम् ।
हरिॐ तत्सत् शिवार्पणमस्तु ।
हर हर महादेव ॥

श्रावण कृष्ण आवस्या तिथि के दिन प्रात:

पञ्च महा कुण्ड स्नान कुण्ड के अधिष्ठात्री देव दर्शन यात्रा

वार्षिक यात्रा ॥ पूजा का सामान रस्सी छोटी बाल्टी स्नान करने के लिये वस्त्र, भस्म आदि साथ में लेकर की ~~गा~~ र्तन करते हुए चलें [-

1 गौरी कुण्ड कूपाय नमः तीर्थाय नमः [केदारेश्वर के नीचे गौरी कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है स्नान कर केदारेश्वर के दर्शन, पूजन करके केदारेश्वर से उत्तर मान सरोवर तीर्थ कूप में स्नान कर मान सरोवरेश्वर के वार्षिक स्नान, दर्शन यात्रा करें।

2 मानसरोवर कूपाय नमः

मान सरोवरेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर बी. में है मुहल्ला मानसरोवर घाट]

कोणार्क तीर्थ कूपाय नमः में स्नान करके के

3 ओंकार्क कूपायनमः ओंकार्क तीर्थ कूप में स्नान करके ओंकार्केश्वर वार्षिक दर्शन पूजन यात्रा करे ओंकार्केश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर बी॰ में है मुहल्ला ओंकार्क घाट] ~~[illegible]~~

4 दुर्गा शक्ति कूपाय नमः दुर्गा जी की ~~[illegible]~~ पश्चिम फाटक के बाहार सटेहुए दाहीना बगल में कूप रूपमें है। स्नान करके दुर्गा जी की दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर बी०२७/२ मैहै
मुहल्ला दुर्गा कुण्ड]

दुर्गा जी से पश्चिम नवाब गंज काश्मीरि गंज होते हुए सड़खु धारा में द्वारिकानाथ विष्णु मन्दिर से सटे हुए पूर्वबगल में विष्णुतीर्थ कुण्ड के रूप मे स्नान दर्शन वार्षिक यात्रा करें। ध

५ विष्णुकृष्णायनमः
द्वारिका विष्णवेनमः [मन्दिर नम्बर
मैहै मुहल्ला सड़खु धारा]

विष्णुतीर्थ में स्नान कर विष्णु भगवान का दर्श, पूजन करने वाले ~~[illegible]~~ नरनारीयों को अनन्य भक्ति और स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ती होती है, कभी भी उस को किसी भी पदार्थ की कामि नहीं होती।

खरवण्रवू धारा से पश्चीम वडी
गईवी में धन्वन्तरी ब्रह्म ऋषि

की तपो भूमी है सत्य युग में धन

वन्तरी जी काशी में आकर काशी की अन्तर्गृ
ही, पञ्च क्रोशी आदि यात्रा करने के पश्चात।
वड़ी गइबी में जाकर शिव लिङ्ग का स्थापना
करने के धनपन्तरी जी ने १० हजार वर्ष
तक तपस्या किये तपस्या से प्रसन्न होकर विश्व
नाथ भगवानने ~~औषदी (दवा)~~ प्राणियों के
कल्याण के लिए। औषदि (दवा) का प्रचार
प्रशार करने के लिए वरदान दिये वह
धन्वन्तरी ऋषि समुन्द्र मथन के समय में
समुन्द्र से प्रगट हुए थे। धन्वन्तरी जीने
(यह धन्वन्तरी जी देवताओं के वैद्य है।)
वड़ी गइवी के कुण्ड में प्राणियों के कल्या
ण के लिये औषदी छोडा है। इस धन्वन्तरी
कूँवा का जल जो कोई प्राणि पियेंगे उन के
कहीं प्रकार के रोग नष्ट होंगे, आज भी हजा
रों रोगी इस कुंवा का जल पिते है अच्छे होते
है। कूँवा का नाम धनवन्तरी तीर्थ है
धन्वन्तरी जी के कर कमलों से स्थापित धन-
वन्तरी वैद्य के रूप के नाम से प्रसिद्ध है।

धनपन्तरी तीर्थाय नमः [वड़ी गइवी का
कूँवा है,

धन्वन्तरी स्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
मुहल्ला वड़ी गइवी]